राधा कृष्ण का प्रेम – आधुनिक युग का दर्शन

डॉ0 कृष्णा शुक्ला
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय
E-mail: krishna.shukla09@gmail.com

पृष्ठभूमि:

वर्तमान युग विकास का युग है जिसमें जीवन के मूल्य तीव्र गति से बदल रहे हैं। आपाधापी के इस युग में जीवन में संतोष व प्रेम समाप्त प्रायः नजर आता है। हिंसा, आक्रोश, तनाव असहिष्णुता, स्वार्थ, भौतिकता व असंतुलित संघर्ष का प्रभाव दिखाई पडता है। इन सब विकृतियों से छुटकारा पाने के लिए इस दौर में राधा कृष्ण का प्रेम एक विकल्प के रूप में नजर आता है। जो कि विशुद्व आत्मिक प्रेम ही था। इस प्रेम के पीछे कितनी गहन सोच थी इसका आज के युग के संदर्भ में विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है।

परिचय:

बूझत स्याम कौन तू गौरी।
कहाँ रहति काकी है बेटी देखी नही कहूँ ब्रजखोरी।।
काहे कौं हम ब्रज तन आवतिं खेलति रहतिं आपनी पौरी।
सुनत रहतिं स्त्रवननि नंद ढोटा करत फिरत माखन दधि चोरी।।
तुम्हारौ कहा चोरि हम लैहें खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदासप्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी।।

राधा कृष्ण का परिचय बचपन में खेलते हुए एक – दूसरे का नाम और गाँव पूछने से प्रारंभ हुआ। धीरे – धीरे यह परिचय प्रेम में परिणित हो गया। आज के युग में प्रेम में रंग, रूप, सुंदरता व सम्पन्नता जैसी बातों का अहम स्थान होता है किंतु राधा –कृष्ण के प्रेम में इन चीजों का कोई महत्व नही था यह सोच समझकर, स्वार्थ को मध्य नजर रखके किया गया प्यार नही था। इसमें पाने की कोई इच्छा नही थी। उनके प्रेम में संपूर्ण आत्मसर्मपण था। दोनों प्रेम में इतने लीन थे कि उन्हें एक दूसरे के सायुज्य की अनुभूति होती थी। एक के बिना दूसरे की कल्पना करना भी कठिन है। कृष्ण सम्पूर्ण पुरूष थे । वे चतुर, दूरदर्शी, तीव्र बुद्वि, कुशल व वाकपटु थे तो राधा भी उनसे बिल्कुल कम नहीं थी। दोनों के चेहरे पर मुस्कान व आनंद का भाव सदा बना रहता था। दोनों में असीम सहनशक्ति थी। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि कृष्ण कभी नहीं रोए लेकिन लाखों लोगों को रूलाते रहे हैं। कृष्ण एक महान प्रेमी थे लाखों स्त्री – पुरूष आज भी उनके लिए आँसू बहाते हैं व उनका जीवन जीते हैं। स्वयं कृष्ण का लीलामय जीवन अपने जीवन में चरितार्थ करते हैं । राधा के मधुर व्यवहार व कोमल वाणी के कारण नंद बाबा व यशोदा मैया मोहित थे। यशोदा मैया उन्हें अत्यंत स्नेह करती थी, उनका श्रृगांर करती थी। कृष्ण का संपूर्ण जीवन आसाधारण था। कंस की कैद में जन्म, फिर नंद बाबा द्वारा अंधेरी रात में मथुरा लाया जाना, यमुना जी का उनके चरण छूने को लालायित होना। अपने उपदेश के माध्यम से उन्होने बुराई का अंत किया जो कि महाभारत के रूप में हुआ।

महत्वः

कृष्ण की 16000 रानियाँ थी, रूकमिनी लक्ष्मी स्वरूपा उनकी पटरानी थी किंतु फिर भी राधा उनको सर्वाधिक प्रिय थी। उन्होनें राधा का हरण किया न तो अपने लिए और न राधा की खुशी के लिए बल्कि इसलिए कि हर युग में महिलाएँ अपनी सीमाएँ व बंधन तोडकर सशक्त बनें।

उन दोनों का प्रेम हर काल में समाज के लिए एक अनुपम उदाहरण सिद्व होगा। यह प्रेम समाज में व्याप्त बुराइयों का अंत करने का सफल व सकारात्मक प्रयास था। राधा – कृष्ण का विवाह नही हुआ किंतु एक स्मरण मात्र से उनकी जुगल जोडी स्वतः मन में उभर आती है। भारतीय साहित्य में विभिन्न संप्रदायों व कवियों ने उनका बहुत ही मनोहारी चित्रण किया है।

आधुनिक युग का दर्शनः

आज का युग संचार के साधन, इंटरनेट व मोबाईल का युग है। जिसके कारण कोई भी व्यक्ति इनके उपयोग के द्वारा विश्व के किसी भी कोने से किसी से भी प्रेम कर सकता है किंतु आज का प्रेम भौतिकता व स्वार्थ की खोखली मिट्टी में जन्म लेकर समय के थपेड़ों के साथ अपना अस्तित्व खो देता है तथा कई बार उसकी परिणिति भयंकर आपराधिक व पाशविक कृत्यों में होती है जैसे कि हम रोज अखबार व खबरों में पढ़ते और देखते हैं।

राधा कृष्ण का प्रेम उस काल में भी सर्वव्यापी था। यह प्यार निस्वार्थ भाव से किया गया शुद्ध आत्मिक प्रेम था जिसमें कहीं लेश मात्र भी बुराई का समावेश नहीं था। उनका प्रेम ये संदेश देता है कि करोड़ों बुराईयों का अंत केवल मात्र पवित्र प्रेम के द्वारा संभव है। हम यह जानते हैं कि जानवर भी प्रेम की भाषा समझता है। आज के युग में बढ़ती बुराईयों का अंत केवल पवित्र प्रेम के द्वारा ही किया जा सकता है अन्य कोई खतरनाक उपाय इसका हल नहीं हो सकता है।

राधा कृष्ण के प्रेम का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने प्रेम में बिना किसी भेद–भाव के समाज को साथ लेते हुए विभिन्न क्रीडाओं का हिस्सा बनाया। असंख्य गोपियाँ व सभी ब्रजवासी भी उनके प्रेम से जुड़े हुए थे। जिन्हें वे समान रुप से प्यार करते थे।

कृष्ण अपूर्व थे। उनका महारास हमें समाज में बंधुत्व, एकता, प्रेम व भाईचारे का पाठ पढाता है। महारास के द्वारा उन्होंने सभी गोपियों को संगठित किया था। उनकी लीलाएँ, क्रीडाएँ व रास प्रकृति का अभिन्न अंग थे। जो कि पर्यावरण के प्रति प्रेम व संतुलन की शिक्षा प्रदान करती है। आज के युग में पर्यावरण संरक्षण व संतुलन एक अहम समस्या है। ये कृष्ण की दूरदर्शिता का परिचायक है। चीरहरण के वक्त द्रौपदी की साड़ी के छोर को अनंत बना देना भी रिश्ते में कोमलता दर्शाता है।

आज का युग बडा पेचीदा युग है। जटिल जीवन शैली के कारण कई जानलेवा बीमारियाँ उग्ररूप धारण कर चुकी हैं जिनका हल काफी हद तक संगीत व प्रेम के माध्यम से संभव है। मनुष्य क्रोध त्याग दे तो ये बीमारियाँ स्वतः ही समाप्त हो सकती हैं।

निष्कर्षः

श्री कृष्ण बहुत दूरदर्शी थे राधा हरण व गोपियों के माध्यम से उन्होने स्त्रियों को संगठित किया व उनको सशक्त बनाया।

- वे जानते थे कि ब्रज क्षेत्र की आर्थिक समृद्वि व आत्मनिर्भरता तभी संभव होगी जब गऊधन जन्य वस्तुओं का कंस द्वारा जबरदस्ती मथुरा मंगवाया जाना बंद होगा।

- रास एक तरह की क्रीडा होती है जिससे शारीरिक विकास के साथ–साथ आत्मिक विकास होता है तथा समाज में भावनात्मक लगाव पैदा होता है उनकी रासलीलाएँ व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास का माध्यम थी। प्रेम के माध्यम से उन्होने समाज में खुशियों का संचार किया।
- किसी भी समाज की समृद्वि में स्त्री शक्ति का बहुत बडा योगदान होता है। उन्होने रासलीला के माध्यम से स्त्री शक्ति को जागृत किया। वे निडर होकर घरों से निकलने लगी।
- संगीत का मानव ही नही समस्त जगत पर बडा सकारात्मक प्रभाव होता है। उन्होने बाँसुरी के माध्यम से सम्पूर्ण समाज में प्रेम रस का संचार किया बाँसुरी की धुन पर गोपियाँ सब कुछ छोडकर दौडी चली आती थी। गोपियाँ ही नही गायें भी बाँसुरी की धुन सुनकर मग्न हो जाती थी।
- उन्होने आत्मा के गीत गाए।
- माखन चोरी उन्होने अपने लिए नही की ग्वाल मित्रों में बाँटने के लिए व माता को रिझाने खिझाने के लिए की।
- प्रेम ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी बात को मनवाया जा सकता है। उन्होने सभी गोप–गोपियों के मन में सकारात्मक सोच पैदा की।
- राधा–कृष्ण का प्रेम सर्वंकष था इसलिये सभी गोपियाँ उनको अपना मानती थी तथा समभाव से प्यार करती थी। महारास में सभी गोपियों को अपने साथ एक–एक कृष्ण की अनुभूति होती थी।
- राधा–कृष्ण का प्रेम दर्शाता है कि उस काल में समाज में स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी। उद्ववजी के द्वारा निर्गुण भक्ति का उपदेश देने पर गोपियों ने ऐसे अकाट्य तर्क दिये जिनका उद्ववजी के पास कोई जवाब नही था। यह राधा कृष्ण का प्रेम ही था जिसने गोपियों को इतना निर्भीक व जागरूक बनाया। जिसके कारण वे निर्भीक और निडर होकर अपनी बात कह सकी।
- अक्रूर जी के द्वारा कृष्ण को मथुरा ले जाने के बाद राधा कृष्ण कभी नही मिले किंतु उनका निस्वार्थ व आत्मिक प्रेम उतना ही निर्मल बना रहा। विरह वियोग के बावजूद भी उसमें कहीं कोई विकृति नही आई जिसका आज के युग में सर्वथा अभाव है।
- राधा कृष्ण का प्रेम यह संदेष देता है कि स्त्री और पुरूष मिलकर ही पूर्णता को प्राप्त होते हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा होता है। अतः दोनों की जुगल जोडी सर्वशक्तिमान मानी जाती है।
- राधा कृष्ण का प्रेम केवल मात्र स्त्री और पुरूष का प्रेम ही नही था। यह प्रेम निस्वार्थ भाव से किया गया आत्मिक प्रेम था जिसने समाज को संगठित किया, आर्थिक व सामाजिक समृद्वि बढाई, भेदभाव का अंत किया, स्त्री शक्ति को सशक्त बनाया, शारीरिक, आत्मिक व भावनात्मक बल का विकास किया, आसुरी शक्तियों का नाश किया, बंधुत्व व भाईचारे का विकास किया।
- वर्तमान परिपेक्ष में राधा कृष्ण के प्रेम को जीवन में आत्मसात कर लिया जाये तो सभी बुराईयों का अंत हो सकता है । विश्व जिस विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है उसको रोका जा सकता है। मानव मात्र का कल्याण हो सकता है।
- राधा कृष्ण के प्रेम की प्रासंगिकता हर काल, हर युग में रहेगी। उसकी ताजगी सदैव महसूस होती रहेगी।
- आज के युग मे राधा कृष्ण का प्रेम एक ह्रदय की तरह है जो कि अपने लिए नही बल्कि दूसरों अंगों के लिए काम करता है। तात्पर्य समाज में सभी को उनके जीवन की अच्छाईयों को आत्मसात करना चाहिए दूसरों की बुराईयों को भुला कर जीवन के अन्य उद्वेलन के बीच स्थिर रहना चाहिए।

माधव राधा के रंग रांचे राधा माधव रंग गई।
माधव राधा प्रीति निरंतर रसना करि सो कहि न गई।।
विहंसि कहयौ हम तुम नहिं अंतर, यह कहिकै उन ब्रज पठई।
'सूरदास' प्रभु राधा माधव, ब्रज–बिहार नित नई – नई।।

संदर्भः

1. भारतीय साहित्य में राधा
संपादक– कल्याणमल लोढा
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
23, दरिया गंज, नयी दिल्ली

2. बिनु गुपाल बैरिनि भईं कुंजै
सूर के उत्कृष्ट पद
संपादक एवं व्याख्याकार
डॉ. श्रीकांत उपाध्याय
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
दरिया गंज, नयी दिल्ली

3. नंद दुलारे वाजपेयी द्वारा सम्पादित ''सूरसागर''
डॉ. माया अग्रवाल, अनीता बंसल
कला मंदिर, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
नई सड़क दिल्ली

4. Radha Krishna – Wikipedia
https://en.wikipedia.org/wiki

5. Untold story of Radha and Krishna / National Discovery
www.nationaldiscoverychannel.com/2013/feb-6

6. 'लोहिया के विचार' के संपादित अंश हिन्दुस्तान नई दिल्ली 28 अगस्त 2013